मनुष्यता ग्रन्थ माला का ४४ वाँ पुष्प—

घरेलू चिकित्सा

—श्रीराम शर्मा आचार्य।

ॐ

सद्ज्ञान ग्रन्थ माला का ४४वां पुष्प—

घरेलू चिकित्सा।

लेखक—

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य।

प्रकाशक—

"अखण्ड-ज्योति" कार्यालय, मथुरा।

प्रथमवार | सम्वत् २००२ वि० | मूल्य छै आना

भूमिका—

हमारे देश की साधारण जनता अशिक्षित तथा गरीब है। शहरों से बहुत दूरी पर फैले हुए ग्रामीण क्षेत्रों की जनता के लिए चिकित्सा का प्रश्न बड़ा ही टेढ़ा प्रश्न है। स्वास्थ्य विज्ञान में उनकी निज की जानकारी प्रायः नहीं के बराबर होती है। वहां जो चिकित्सक पाये जाते हैं उनका चिकित्सा क्रम भी बड़ा दोष पूर्ण होता है, ऐसी दशा में ऐसे अनेक रोगी जो साधारण चिकित्सा से ही अच्छे हो सकते थे—साधन न मिलने के कारण अपनी जीवन लीला समाप्त कर देते हैं।

ऐसे लोगों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए ही यह पुस्तक लिखी गई है, इसमें गिने चुने प्रसिद्ध रोगों पर कुछ सरलता से उपलब्ध होसकने वाली सीधी सादी औषधियां लिखी हैं। जो कम मूल्य की, बनाने में सुगम और हानि रहित हैं। विष, रस, भस्म तथा ऐसी चीजें जिनके सेवन में कुछ असावधानी हो जाय तो खतरा उत्पन्नहोजाय इस पुस्तक में नहीं लिखीं गई हैं। इस पुस्तक की सहायता से साधारण पढ़े लिखे लोगों को और अल्पशिक्षित स्त्रियों को तो अपने निकटस्थ लोगों की बीमारियां दूर करने में बहुत हद तक सफलता प्राप्त होसकती है।

रोगों के लक्षण, पथ्य, मात्रा, सेवन विधि आदि बहुत सी बातें इस छोटी पुस्तिका में नहीं लिखी जासकी हैं। इसके लिए अपनी स्वाभाविक बुद्धि से काम लेना चाहिए, या किसी निकटवर्ती जानकार वैद्य से सलाह लेनी चाहिए। नुसखों में से कोई एकाध चीज प्राप्त न होती हो तो उसे छोड़ा भी जा सकता है। किसी विशेष रोग की असाधारण स्थिति में इन पंक्तियों के लेखक से पाठक सलाह ले सकते हैं।

हमारा विश्वास है कि जिन देहाती क्षेत्रों में प्राकृतिक चिकित्सा का ज्ञान और साधन पहुँचने अभी कठिन हैं उन क्षेत्रों में यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी।

—श्रीराम शर्मा

घरेलू-चिकित्सा

मलेरिया ।

(१) तुलसी के पत्ते और कालीमिर्च पीस कर चने की बराबर गोली बनालें। एक एक गोली गर्म पानी के साथ सुबह शाम लें।

(२) कुड़े की छाल, घीग्वार की जड़, कालीमिर्च, चिरायता, पीपल, निंबौली की गिरी, करंजे की गिरी, गिलोय, अजमोद, चित्रक इन्हें बराबर लेकर नीबू के रस में खरल करके मटर जैसी गोली बनालें। सुबह शाम एक एक गोली शहद के साथ खावें।

(३) पीपल का चूर्ण १॥ मासे नौसादर आधा मासे लेकर एक तोले पुराने गुड़ में मिला कर प्रातःकाल खावें।

(४) पटोल पत्र, नागरमौथा, लालचंदन, कुटकी, नीम की छाल, चिरायता, बंश लोचन, इलाइची, गिलोय, धनियां. सोंठ, तुलसी की जड़, अजवायन, कालाजीरा. यह सब चीजें बराबर लेकर कूट छान कर रखलें। इस चूर्ण में से १॥ मासे शहद के साथ सुबह शाम लें।

(५) नीम के फल, फूल, कोंपल, छाल, जड़ बराबर लेकर इनका चूर्ण बनालें। इसमें से २ मासे लेकर नीम की छाल के काढ़े के साथ पीवें।

(६) कमल गट्टे की मिंगी, खूबकला, नीलोफर, लाल-चन्दन, गिलोय और भाँग बराबर लेकर अदरख के रस में खरल करके, चने की बराबर गोली बनालें। एक एक गोली सुबह शाम शहद के साथ लें।

(७) पाढ़ की जड़, खुरासानी अजवायन, काला जीरा, लोंग, पीपल, चित्रक, मुलहठी इन्हें बराबर लेकर पीसलें और मूंग की बराबर गोली बनालें। दो दो गोली सुबह शाम शहद के साथ लें।

(८) धतूरे की बीजों को किसी मिट्टी के बर्तन में भर कर उसका मुँह अच्छी तरह बन्द कर दें। इसे एक प्रहर कंडों की आग में लगा रहने दें। पीछे ठंडा हो जाने पर खोलें और पीसकर रखलें। इसमें से ३ रत्ती शहद के साथ दें।

(९) कालीमिर्च ७, करंजे की गिरी १ मासे, रसौत १ मासे, फिटकरी का फूला ४ रत्ती इन सबको दो तोले पानी में पीस कर छानलें। थोड़ा सा सेंधा नमक मिला कर पीवें।

(१०) करेले की जड़ १॥ मासे, जीरा १ मासे, काली मिर्च ७, पुराना गुड़ ६ मासे मिलाकर सेवन करें।

(११) गौ मूत्र में थोड़ा सेंधा नमक डालकर पैर के तलवों में मालिश करें।

विषम ज्वर।

(जो ज्वर कभी सर्दी से, कभी गर्मी से, कभी कम, कभी ज्यादा तथा समय वेसमय अनिमयित रूप से आते हैं, उन्हें विषम ज्वर कहते हैं)

(१) हर्र, बहेड़ा, आवला, नागर मोथा, इन्द्र जौ, चिरायता, गिलोय, लालचन्दन, पटोल पत्र, पाढ़, कुटकी, सोंठ इन औषधियों को बराबर लेकर जौ कूट करके रखलें। इनमें से १ तोला लेकर पावभर पानी में मंद-मंद आग पर पकावें जब एक छटांक रह जावे तो छान कर थोड़ी मिश्री मिला कर पीवें।

(२) सोंठ, काला जीरा, वायविडंग, नीम की गुठली का गूदा इन्हें बराबर लेकर तुलसी के रस में खरल करें और उर्द की बराबर गोली बनालें, दो गोली गरम पानी के साथ सुबह शाम लें।

(३) चिरायता, हरड़, पीपल, नेत्रवाला, त्रायमाण, कुटकी, सोंठ, गिलोय इन्हें बराबर लेकर जौं कूट करके उसमें से दो तोले दवा ≈॥ पानी में एक दिन रात मिट्टी के वर्तन में भीगने दें। दूसरे दिन इसे मसल कर छान ले और थोड़ा शहद मिला कर पीवें।

(४) चौलाई की जड़ का रस ३ मासे, शहद ३ मासे मिलाकर चाटे।

(५) देवदारु, जवासा, कचूर, पीपल, कटेरी की जड़, का चूर्ण ३ मासे, पुराना गुड़ ३ मासे मिलाकर खावें।

(६) नीम की छाल, धनियां, सनाय, अमलताश का गूदा, बड़ी हर्र का छिलका, गिलोय, चिरायता, सोंठ, इनमें से हर एक तीन तीन मासे लेकर आध सेर पानी में पकावें जब आध पाव रह जावे तो छानकर मिश्री मिलाकर पीवें। इससे एक दो दस्त साफ हो जाते हैं और ज्वर चला जाता है।

(७) दाख ७ दाने, सोंठ १॥ मासे, पीपल १॥ मासे, गिलोय १॥ मासे, जावित्री १॥ मासे यह सब चीजें जौ कुट करलें। फिर पावभर गौ या बकरी के दूध में पावभर पानी डालकर इन दवाओं के साथ पकावे जब पानी जल जाय तो दूध को उतार कर छानले। इस दूध को पीने से विषय ज्वर जाते हैं।

(८) लोंग, निशोथ, अपामार्ग की जड़, अजवायन, अजमोद, कटेरी की जड़, इन्हें पीसकर मूंग बराबर गोली बनाले। ज्वर आने से २ घंटे पहले २ गोली पान में रखकर खावें।

सन्तत ज्वर ।

(हर वक्त थोड़ा बहुत बना रहने वाला बुखार)

(१) कुटकी, त्रायमाण, सारिवा, नागरमोथा, चित्रक, जवासा यह दो तोले लेकर आध सेर पानी में पकावें जब आध पाव रह जाय तो छान कर छै मासे शहद मिलाकर पीवें ।

(२) सत गिलोय १॥ मासे शहद में मिलाकर चाटें ।

(३) अजवायन ६ मासे एक दिन रात पानी में भिगोवें दूसरे दिन उसे सिल पर आध पाव पानी के साथ पीस कर छानलें । एक कुल्हड़ आग में खूब लाल करके उसमें इस पानी को डालें । डालते समय जो भाप निकलती है उसे मुँह और छाती पर लें । और दवा को छानकर जरा सा काला नमक मिलाकर पीवें ।

जाड़े का बुखार ।

तिजारी व चौथैया

(एक दिन बीच में देकर व दो दिन बीच में देकर आने वाले ज्वर)

(१) अडूसा, पटोलपत्र, तेजपात, अमलताश, दारुहल्दी, बच, राई, पीपल, इनको दो ताले लेकर क्वाथ बनाकर पीवें ।

(२) लालचन्दन, खस, हरड़, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, आँवला, देवदारु, दारुहल्दी, इन्हें दो तोले क्वाथ लेकर बनाकर पीवें ।

(३) एक वर्ष पुराने घी में हींग मिलाकर सूंघें ।

(४) ओंगा की पत्ती २ मासे पीसकर पुराने गुड़ के साथ मिला कर खावें ।

(५) नौसादर और कालीमिर्च बराबर लेकर पीसलें। इसमें से एक माशा लेकर शहद के साथ चाटें।

(६) करंजे की मिंगी को नीबू के रस में खरल करे और चने की बराबर गोलियां बनालें गर्म पानी के साथ यह गोली सुबह शाम लें।

(७) अतीस की जड़ १ तोले, पोस्त खसखस ३ मासे, कासनी के बीज ६ मासे, उन्नाब १ तोले, बहेड़ा १ तोले, करंजे की गिरी १ तोले, फिटकरी भुनी १॥ मासे इन दवाओं को कूट छान कर चूर्ण बनालें। १॥—१॥ मासे सुबह शाम शहद के साथ लें।

पुराने बुखारों पर।

(१) पीपल का चूर्ण १॥ मासे गिलोय के रस और शहद में मिलाकर सेवन करें।

(२) नागर मोथा, चिरायता, पितपापड़ा, गिलोय, कुटकी, सोंठ, तालीस पत्र, कचूर, कायफल, काकड़ासिंगी, कूट, पोहकर मूल, बराबर लेकर कुचल लें। दो तोले दवा आध सेर पानी में पकावें चौथाई रह जाने पर छान कर पीवें।

(३) खिरैटी, मुलहटी, सारिवा, पद्माख, धमासा, धनिया, खस, कमलगट्टा, सुगन्ध वाला, पोहकर मूल, कचूर, चिरायता, पीपल इनका चूर्ण १॥ मासे नित्य शहद के साथ सेवन करें।

(४) रास्ना, कटेरी की जड़, जीरा, कुटकी, बंशलोचन, देवदारु, अनन्तमूल, सोंठ, इन्हें अदरख के रस और तुलसी के रस में खरल करें फिर उर्द की बराबर गोली बनाले। एक एक गोली दो दो घंटे बाद शहद के साथ लें।

(५) बड़ की कोंपल, अजमोद, हरड़, चित्रक, हंसराज, हल्दी, जवाखार, बहेड़े की गुठली, निशोथ, पटोलपत्र, बन तुलसी की जड़, सोंठ, सेंधानमक इन्हें नीम की छाल के क्वाथ में खरल करके चने जैसी गोलियां बनालें, अदरख के रस और पान के रस के साथ एक एक गोली, सुबह शाम लें।

लू लगने का बुखार।

(१) कासनी, धनियां, बनफशा, मकोय, मुलहटी, सोंफ, काली मिर्च, दाख, बराबर लेकर कूट छान ले। इसमें से २ तोले लेकर ऽ।= पानी में पकावे जब ऽ= रह जावे तो छान कर ठंडा करले और मिश्री मिला कर पीवें।

(२) धनिया ३ मासे काहू के बीज ३ मासे छटांक भर पानी में पीस कर छान लें इसमें ४ तोले अर्क गुलाब, २ तोले शर्बत चंदन मिलाकर पिलावें।

(३) आंवले का मुरब्बा चांदी का वर्क लपेट कर खिलावें।

(४) छोटी इलाइची, धनियां चन्दन, खस, पोस्त के बीज, गुलाब के फूल, इन्हें मिला १॥ तोले लें। छै छटांक पानी में औटावें जब आध पाव रह जावे तो मिश्री मिलाकर पीवें।

(५) कद्दू के बीज ६ मासे मिश्री की चाशनी के साथ खिलावें।

(६) शतावरि, ढाक का गोंद, धायके फूल तीनों को गुलाब के फूलों के रस में घोटकर गोली बनालें। एक गोली पान के साथ दें।

तिल्ली बढ़ने पर।

(१) बड़ी हरड़, सेंधा नमक और पीपर का चूर्ण पुराने गुड़ के साथ खावें।

(२) आक के पीले पत्ते, सेंहुड़, सँहजन की छाल, पांचों नमक पाव पाव भर, पीपर, सोंठ, अजवायन, नौसादर, चित्रक, लोंग, कूट, एक एक तोले इन्हें मिट्टी के बर्तन में बन्द करके भली प्रकार कपरमिट्टी करदें और एक प्रहर तक कंडों की आग में लगा रहने दें। ठंडा होजाने पर भस्म को पीसलें। १ मासे गरम पानी के साथ लें।

(३) सरफोका की जड़ और चीते की जड़ का चूर्ण २ मासे, नमक जीरा मिले हुए मिट्ठे के साथ सेवन करें।

(४) राई, जवाखार, भुनी हींग, सोंठ, जीरा, कूट, पीपर, सोंठ, चीता, सेमर के फूल. चव्य, पीपरा मूल, हरड़ इन्हें पीस कर बिजौरे नीबू के रस में खरल करें और मटर की बराबर गोली बनालें। एक गोली नित्य गरम पानी के साथ लें।

(५) मूली का खार. बेंगन का खार, जवाखार, सज्जीखार और नोसादर इन्हें पीस कर रखलें। इसमें से १ मासे, मूली के रस या नीबू के रस के साथ सेवन करें।

(६) हरड़ बहेड़ा आंवला, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, सँहजन की छाल, दारुहल्दी, कुटकी, गिलोय, पुनर्नवा इनका क्वाथ बना कर पीवें।

(७) दो अंजीर जामुन के सिरके में डुबाकर प्रातःकाल नित्य खावें।

(८) आधा मासे नौसादर गरम पानी के साथ सबेरे लें।

जिगर बढ़ने पर।

(१) राई को गो मूत्र में पीस कर पेट पर लेप करे।

(२) हल्दी, दारुहल्दी, पीपर, मूली का खार, इनका चूर्ण ३ मासे, ग्वार पाठा के गूदे के साथ खावें।

(३) मूली का रस २ तोले जरासा जवाखार डाल कर पीवें।

(४) पीपर बायविंगा, नाग केशर, सोंठ, गिलोय इनको मिट्टी के कुल्हड़ में बन्द करके आग में लगादें। भस्म होजाने पर निकाल लें। इसमें से १ मासे गाय के मट्ठे के साथ खावें।

(५) अलसी और अरण्डी के बीज पीस कर जिगर पर लेप करें।

(६) नागरमोथा, आँवला, हरड़, पीपर, गूमा की जड़, पीपरा फल, नीम की छाल, पटोल पत्र, पुनर्नवा, करेले की जड़ इनका चूर्ण २ मासे शहद के साथ खावें।

(७) करेले के बीजों की गिरी मकोय के पत्तों के रस में घोट कर चने बराबर गोली बनालें गरम पानी के साथ इन गोलियों को सेवन करें।

(८) बथुआ की जड़ और काली मिर्च इन्हें पीसकर जंगली बेर की बराबर गोली बनालें। १ गोली शहद के साथ नित्य खावें।

(९) गौमूत्र गुनगुना करके उसमें कपड़ा भिगो कर जिगर के स्थान पर पेट को सेंके।

(१०) नीम की छाल का क्वाथ शहद मिलाकर पीवें।

चेचक।

(१) हल्दी का चूर्ण व नीम की गिरी बराबर तुलसी के रस में घोटले इसकी मूंग बराबर गोली बनालें जब चेचक फैलने की संभावना हो तो इन गोलियों में से एक गोली पानी के साथ प्रातःकाल देना चाहिए। इससे चेचक नहीं निकलती।

(२) कलौंजी का चूर्ण शहद में मिलाकर चटावें।

(३) गाय का घी कांसे की थाली में डाल कर ठंडे जल से सौ बार धोकर उसमें कपूर मिलाकर फुन्सियों पर लगाने से जलन शान्त होती है।

(४) तुलसी के पत्ते, जावित्री, जायफल, इलायची, एक एक तोले केशर ३ मासे, बंशलोचन ६ मासे, मोती छोटे १ मासे इन सबको गंगाजल में पीस कर मोंठ की बराबर गोली बनाले। छोटे बच्चों को एक गोली, बड़े बच्चों को दो गोली नित्य दें।

(५) बिनौले, लाख, मसूर, असीस, बच, तुलसी, बांस की लकड़ी इनका धुंआं चेचक की फुन्सियों पर लगावें।

(६) अड़ूसे का रस और शहद मिलाकर चटावें।

(७) धमासा, खस, आंवला, रास्ना, धनियां, खिरेटी, खैर, सफेद चन्दन, लालचन्दन, दाख इन सबको पीसकर मूँग बराबर गोली बनालें। ताजे पानी के साथ यह गोली सेवन करें।

(८) पटोल की जड़, श्योनाक, चौलाई की जड़, हल्दी, अड़ूसा, इन्द्रजौ, पटोल पत्र, नीम की छाल इन्हें करेले के पत्तों के रस में घोट कर गोली बनालें। यह गोली शहद के साथ दें।

(९) जंगली कंडों की राख छान कर छिर छिरे कपड़े की पोटली बनाकर रखलो। फुन्सियों पर इसे झाड़ कर लगा देने से फुन्सियाँ जल्दी अच्छी हो जाती है।

(१०) बेर की गुठली की गिरी १ मासे पुराने गुड़ के साथ खावें।

———

खांसी ।

(१) काकड़ा सिंगी और मुलहटी बराबर बराबर पीस कर रखलें। इस चूर्ण को एक मासे लेकर शहद में लेकर चाटें, दिन में कई बार चाटना चाहिए।

(२) अदरख का रस, पान का रस, शहद तीनों को तीन तीन मासे मिलाकर चाटें।

(३) अडूसे का क्षार चार रत्ती लेकर थोड़े शहद में मिलाकर चाटें।

(४) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल इन्हें बराबर लेकर चूर्ण बनालें। एक एक मासे लेकर शहद के साथ सेवन करें।

(५) हल्दी की भूभल में खूब भूनलें। फिर उसके छोटे२ टुकड़े करके सुपाड़ी का तरह मुँह में पड़े रहने दें, धीरे धीरे रस गले में जाने दें।

(६) काकड़ासिंगी, बबूल का गोंद, खसखस का पोस्त, छोटी पीपल, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी इलाइची, सबको बराबर पीस कर पुराने गुड़ के साथ मटर की बराबर गोलियां बनालें। इन गोलियों को सुपाड़ी की तरह मुंह में डालकर चूसना चाहिए।

(७) अडूसा, कटेरी, सोंठ, पोहकर मूल, कुलथी, भारंगी काकड़ासिंगी, पीपर, कचूर, बहेड़े की छाल, चव्य, इन सब चीजों को घीग्वार के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोली बनालें। सुबह शाम एक २ गोली गरम पानी के साथ लें।

(८) पपरिया कत्था, उन्नाव, मुलहटी, कालीमिर्च, लोंग बबूल का गोंद, अनार का छिलका, छोटी इलाइची, कुलंजन, अकरकरा, जायफल, यह सब बराबर लेकर अडूसे के पत्तों के

रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोली बनालें, इन्हें मुख में डालकर धीरे धीरे चूसें।

(९) सत उन्नाव और सत मुलहटी बराबर बराबर लेकर मुँह में डाललें और उनका रस धीरे धीरे गले में जाने दें।

(१०) बबूल का गोंद, कतीरा, बादाम की मिंगी, बंसलोचन, इनको बराबर पीसकर शहद में मिलाकर चटनी सी बनालें। थोड़ी थोड़ी चाटते रहें।

(११) ढाक के पत्ते, अडूसे के पत्ते, अंजीर के पत्ते, केले के पत्ते, लिसोड़े के पत्ते, बराबर लेकर एक मिट्टी की हांडी में रख कर अच्छी तरह मुंह बन्द करदें, उस हांडी को कंडों की आग में एक पहर लगा रहने दें। पीछे हांडी बिलकुल ठंडी हो जाने पर दूसरे दिन उन जले हुए पत्तों को निकालें। मिश्री की चासनी के साथ एक मासे इस भस्म को चाटना चाहिए।

(१२) दालचीनी का चूर्ण अंजीरके शर्बत के साथ चाटें।

(१३) ढाईसेर पानी में दो छटांक मुलतानी मिट्टी घोल दें। जब मिट्टी नीचे बैठ जाय तो उस पानी को नितार कर पीवें।

(१४) बबूल का वक्कल और मिश्री चूसने से खांसी अच्छी होती है।

सर्दी-जुकाम।

(१) दही में सफेद बूरा मिला कर प्रातःकाल पीना चाहिए।

(२) अदरख का रस और शहद छै छै मासे लेकर चाटना चाहिये।

(३) कालीमिर्च, सोंठ, छोटी पीपल को बराबर कूट पीस कर उससे चौगुना गुड़ मिलाकर बड़ी मटर की बराबर

गोलियां बनालें, इन गोलियों को गरम पानी के साथ सेवन करें।

(४) अनार के फल का रस, दूब का रस और गुलाब-जल मिलाकर उससे नाक को तर रखने से जुकाम अच्छा हो जाता है।

(५) उबलते हुए गरम उर्दों को नमक मिलाकर भोजन के बाद खावें।

(६) दालचीनी, तेजपात, इलाइची, नागकेशर, बच, वायविडंग, हींग और काला जीरा बराबर लेकर महीन पीसलें। उस चूर्ण को कपड़े की पोटली में बांध कर बार बार सूघें।

(७) नौसादर और चूना बराबर लेकर पीसकर शीशी में भरलें और मजबूत कार्क लगालें। इसे बार २ सूघें।

(८) गेंहू की भूसी १ तोले, गुलबनफसा १ तोले, काली मिर्च १० मासे इनको ऽ।≈ पानी में पकावें जब ऽ≡ रह जावे तो छान कर थोड़ी मिश्री मिलाकर गरम गरम पीलें और कपड़ा ढक कर लेट रहें। इससे पसीना आता है और जुकाम अच्छा होजाता है।

(९) सोंठ और पोस्त एक एक तोले लेकर आधसेर पानी में पकावें चौथाई रह जाने पर छानलें थोड़ा शहद मिलाकर पीवें।

(१०) शकर का धुँआ सूँघने से जुकाम जाता है।

(११) गेरू, बेहड़े की गुठली का गूदा, कपूर, पान का रस और बबूल का गोंद बराबर लेकर महीन पीसलें। इसे कपड़े के दो छोटे टुकड़ों पर लेप करके कनपटियों पर चिपका देना चाहिए।

(१२) कद्दू के बीज, पोस्त, अजवायन, कत्था और जावित्री बराबर लेकर अदरख के रस में घोटले इनकी उर्द की

बराबर गोली बनाले। यह गोलियां चूसें।

(१३) हल्दी ६ मासे, कालीमिर्च १॥ मासे तथा थोड़ा सा काला नमक आधसेर पानी में औटावें जब आधा रह जाय तो छान कर गरम गरम पीवें।

(१४) गरम गरम भुने चने सूँघें और चबावें।

(१५) गुलबनफसा ४ मासे, उन्नाव नग ७ सौंफ ४ मासे सनाय ६ मासे, मुनक्का नग ७, अंजीर नग ३, इन सबको डेढ़ पाव पानी में पकावें जब आध पाव रह जावे तो छान कर तोले भर मिश्री मिलाकर पीवें। इससे पेट भी साफ हो जाता है और जुकाम भी चला जाता है।

श्वास।

(१) गरम पानी में मोटा कपड़ा भिगो कर इससे छाती को सेंक करने से दमे का दौरा रुकता है।

(२) एक चोड़े गहरे बर्तन में गरम पानी भर कर उसमें रोगी को पैर रखकर आध घंटे बैठावे, इससे भी दौरा रुकता है।

(३) गरम पानी पीने से श्वांस की अधिकता रुकती है।

(४) अजवायन, सुहागा, लौंग, सेंधानमक, कालानमक, साँभर नमक इनको बराबर लेकर एक मिट्टी की हाँडी में रख कर उसका अच्छी तरह मुँह बन्द करदें फिर उसे कंडों की आग में एक प्रहर तक जलावें बाद में ठंडा होने पर हांडी का मुँह खोलकर भस्म को पीसकर रखलें। इसमें से दो दो रत्ती दवा शहद के साथ सेवन करें।

(५) एक तोले सोंठ का चूर्ण छै छटाक पानी में पकावें जब पानी आधपाव रह जाय तो उसे छान कर पीवें।

(६) कचूर, नागरमोथा, पोकरमूल, सोंठ, छोटी पीपल,

काकड़ा सिंगी, कालीमिर्च, इनको समान भाग कूट कर रखलें। इस चूर्ण को २ मासे लेकर गिलोय और अडूसे के रस के साथ सेवन करें।

(७) काकड़ा सिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, हरड़, बहेड़ा, आंवला, कटेरी का पंचाङ्ग, नारंगी, कूट, जटामासी, पांचों नोंन, सबको समान भाग पीसकर रखलें। इस चूर्ण को २—२ मासे सुबह शाम गरम जल के साथ लेना चाहिए।

(८) धाय के फूल, पोस्त के डौंड़े, बबूल का बक्कल, कटेरी, अडूसा, छोटी पीपल, सोंठ इन सबको ३-३ मासे लेकर आधसेर पानी में पकावे जब आध पाव रह जाय तो छान कर छै मासे शहद मिला कर पीवें।

(९) सफेद दखनी गोलमिर्चों को भूनकर उसमें बराबर मिश्री मिलालें। इसमें से १-१ मासे दिन में कई बार सेवन करें।

(१०) सफेद जीरा ३ मासे, छोटी दुधी ४ मासे इन दोनों को आधी छटांक पानी में पीसकर छानलें, जरा सा सेंधा नमक डालकर प्रातःकाल पीवें।

(११) गेरू—रसौत, छोटी पीपल, कैथ, पौकर मूल, कचूर, मालकांगनी, छोटी इलाइची के बीच, भुनी हुई फिटकरी, वायविडंग, हल्दी, भारंगी इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनालें। इसमें से २-२ मासे सुबह शाम शहद के साथ सेवन करें।

(१२) आक के पीले पत्ते और कटेली का पंचांग बराबर लेकर मिट्टी की हांडी में बंद करके कंडों की आग में एक प्रहर तक जलावें। ठंडा होने पर इसमें से दो रत्ती लेकर शहद के साथ चाटें।

(१३) सेंधानमक और गाय का घी मिलाकर छाती पर मलने से श्वांस रोग में लाभ पहुंचता है।

(१४) भुनी अलसी ४ तोले भुनी कालीमिर्च १ तोले पीसकर रखलें, इसमें से ३ मासे चूर्ण सुबह शाम सेवन करें।

(१५) कूट, जवाखार, सोंठ पीपल और हर्र का वकल चारों एक एक मासे लेकर पानी के साथ सिल पर पीसलें इसे चाट कर ऊपर से दो घूंट गरम पानी पीवें।

हिचकी।

(१) आमके सूखे पत्ते चिलम में रखकर उसका धुंआ पीने से हिचकी दूर हो जाती है।

(२) केले की जड़के रस में थोड़ी मिश्री मिलाकर पीवें।

(३) घी और शहद में थोड़ा जवाखार मिला कर चटावें।

(४) बिजौरे नीबू के रस में सेंधानमक डालकर चाटें।

(५) बड़ी इलाइची पीस कर मिश्री की चासनी के साथ चाटें।

(६) सेर भर पानी में एक तोले राई महीन पीसकर मिलादें जब राई नीचे बैठ जाय तो उस पानी को नितार कर पिलावें।

(७) मोरपंख के चँदवे की भस्म एक रत्ती शहद और मक्खन के साथ चाटें।

(८) आधसेर बकरी के दूध में आधसेर पानी और एक तोले सोंठ मिलाकर आग पर पकावे जब आधसेर रह जाय तो छान कर थोड़ा थोड़ा करके दो तीन बार में पिलावें।

(९) रसौत और बेर की गुठली की गिरी पानी के साथ पत्थर पर घिस कर चाटें।

(१०) मूसली, भारंगी, नेत्रवाला, कचूर, पोहकरमूल, शिवलिंगी, इन्हें बराबर पीसकर सब की बराबर मिश्री मिलालें, इस चूर्ण को थोड़ा २ मुख में रखें।

(११) सोंठ आँवला देवदारु और पीपल का समान भाग चूर्ण २ मासे गरम पानी के साथ लें।

(१२) काला नमक, सेंधा नमक, सांभर, समुद्र नमक इन चारों को बराबर पीसकर मुँह में डालें।

(१३) साठी चावलों का भात घी के साथ खिलावें।

(१४) गौ के गरम दूध में गौ घृत डालकर पीवें।

(१५) हरा पोदीना १ तोले लेकर उसे एक पाव पानी में पीसले, थोड़ी मिश्री मिला कर छानलें इसे शर्बत की तरह पीवें।

(१६) नारियल की गिरी और मिश्री चबावें)

(१७) बबूल के हरे काँटे एक तोले लेकर डेढ़ पाव पानी में मंद मंद अग्नि पर पकावें जब आध पाव रह जाय तो छान कर पीवें।

(१८) चने की दाल अरहर की दाल और मसूर की दाल के छिलकों को चिलम में रखकर उसका धुँआ पीवें।

(१९) नारियल की जटा जलाकर उसे पानी में घोल दें इस पानी को नितार कर पीवें।

(२०) रोगी का चित्त हिचकी पर से हटा देना चाहिए। अचानक डरा देने हँसा देने, चोंका देने, शोक या हर्ष पैदा कर देने, अनजान में मुँह पर पानी छिड़क देने आदि क्रियाओं से कुछ देर के लिए रोगी का चित्त हटकर एक दम बिलकुल दूसरी तरफ लग जाता है तो हिचकी बन्द होजाती है।

(२१) गौ मूत्र सूँघने से हिचकी बन्द होती है।

(२२) ढाक के बीज, बेलगिरी, बच और कमल के बीज बराबर मात्रा में लेकर लहसन के रस में खरल करके मूँग बराबर गोली बनालें, इन गोलियों को मुँह में रखने से हिचकी बन्द होती हैं।

गला बैठ जाना और गले का दर्द।

(१) अकरकरा कुलंजन मुलेठी के टुकड़े सुपाड़ी की तरह मुँह में रखने से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

(२) चव्य चित्रक, तालीस पत्र, सफेद जीरा, बंसलोचन, कालीमिर्च, अमलबेंत, सोंठ, तेजपात, इलाइची, दालचीनी इन सबको बराबर लेकर कूट छान लें। इस चूर्ण को २ मासे शहद के साथ चाटें।

(३) आंवले का चूर्ण गाय के धारोष्ण दूध के साथ पीवें।

(४) मूली के बीज, कबाब चीनी कुलंजन, कालीमिर्च, बड़ी इलाइची मुलहटी इन सब को बराबर लेकर कूट छान लें और पानी के साथ गोली बनालें। इन गोलियों को मुख में रखकर चूँसें।

(५) अगर, देवदारु, हल्दी, बच, मीठा कूट, कालीमिर्च बराबर लेकर जौकुट करके दो तोले लें। उसे छै छटांक पानी में पकावें जब डेढ़ छटाँक रह जावे तो मिश्री मिलाकर पीवें।

(६) गन्ना भूनकर चूसने से बैठा हुआ गला खुल जाता है।

(७) सोंठ, मिर्च, पीपल, हरड़ बहेड़ा आंवला, और जवाखार इन सबका चूर्ण थोड़ा २ मुँह में डालते रहें।

(८) अजवायन और खसखस के पोस्त बराबर लेकर उसका काढ़ा बनावें। इस काढ़े से गरगरे करने चाहिए।

(९) अदरख की गांठ में छेद करके उसमें थोड़ा सा नमक और भुनी हुई हींग भरकर आग में भूनलें, इसे पीसकर छोटी छोटी गोलियाँ बनालें इन्हें चूसें।

(१०) गोरखमुण्डी की जड़ पान में रख कर खावें।

(११) बच, खुरामानी अजवायन, माल कांगनी, बच, कुलंजन, हरड़ की गिरी सेंधानमक इन सबको बराबर पीसकर चूर्ण बनालें। इसे सुबह शाम शहद के साथ सेवन करें।

(१२) बड़ा गोखरू खिरेटी सोंठ,रास्ना, छोटी पीपल, कालीमिर्च, इन्हें १ तोले लेकर सिल पर पीसकर मिश्री के साथ चाटें।

(१३) पीपर, अडूसा, हरड़, बच, ब्राह्मी इनका चूर्ण ३ मासे शहद और घी में मिलाकर चाटें।

(१४) अडूसे के पत्तों का काढ़ा शहद के साथ पीने से गला खुल जाता है।

(१५) अमलताश के गूदे का काढ़ा बनाकर उससे गरम २ कुल्ले करें।

(१६) मैदा, हल्दी। अलसी का तेल और फिटकरी की पुल्टिस बनाकर गले पर बांधे।

(१७) अनार की कली, सूखा धनियां, पोस्त के दाने, शहतूत के हरे पत्ते, मसूड़ के दाल छै छै मासे लेकर एक सेर पानी में काढ़ा बनावें उससे कुल्ला करने से गले की सूजन और दर्द बन्द होजाता है।

प्रमेह।

(१) हरी गिलोय का रस १ तोले शहद ३ मासे मिलाकर चाटें।

(२) शुद्ध शिलाजीत १ मासे लेकर दूध के साथ सेवन करें।

(३) जौ की रोटी खावें।

(४) बबूल की कोंपल, शीशम की कोंपल, गिलोय, शंखपुष्पी यह चारों चीजें मिलाकर २ तोले लें पाव भर पानी में ठंडाई की तरह घोट कर मिश्री मिला पीवें।

(५) हल्दी तालमखाना मूसली गोखरू बड़ा, शितावरि इन पांचों चीजों को चूर्ण बनालें। ३ मासे चूर्ण गौ के धारोष्ण दूध के साथ लेना चाहिए।

(६) सालम मिश्री, शीतल चीनी, दालचीनी कोंच के बीज मूसली, सफेद, मूसली स्याह, तवाखीर, छोटी इलाइची, खिरैटी आंवला, विदारीकन्द मुलहटी इनका चूर्ण ३ मासे ऽ। दूध के साथ लें।

(७) बड़ का दूध १० बूँद एक बतासे में रखकर प्रातःकाल खावें।

(८) गूलर के कच्चे फल छाया में सुखाकर पीसलें। बराबर मिश्री मिलाकर ताजे जल के साथ एक तोले लें।

(९) कतीरा, ढाक का गोंद, बबूल का गोंद, सेमल का गोंद लजवन्ती के बीज, बंसलोचन, ईसबगोल की भुसी, चिकनी सुपाड़ी, बंसलोचन, इन्हें पीसकर चूर्ण बनालें। मात्रा ३ मासे। दूध के साथ।

स्वप्नदोष।

(१) मुलहटी का चूर्ण १॥ मासे धारोष्ण गो दूध के साथ लें।

(२) पक्के केले मिश्री से लगा लगा कर खावें।

(३) गिलोय, गुलाब के फूल, आंवला, धनिया, चन्दन-चूरा इनका ठंडाई बनाकर पीवें।

(४) इमली के बीज बबूल के बीज ढाक के बीज, कोंच के बीज, ३ – ३ मासे लेकर २४ घंटे पानी में भीगने दें। दूसरे दिन छिलके उतार कर सिल पर पीसलें और मिश्री मिलाकर चाटें।

(५) शतावरि, तालमखाने, कोंच के बीज, गिलोय का सत, सफेद मूसली, गोखरू, चोपचीनी बराबर लेकर चूर्ण बनालें। २ मासे शीतल जल के साथ सुबह शाम लें।

(६) शीतलचीनी और मिश्री बराबर मात्रा में पीसकर रखलें। इसमें से ६ मासे लेकर गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन करें।

(७) बबूल का बक्कल, गोंद, फूल, फली, पत्ती, सबको सुखा कर बराबर मात्रा में पीसलें। इसमें ६ मासे लेकर दूध के साथ सेवन करें।

(८) इलाइची, बंसलोचन, गिलोय का सत, मुलहटी, हल्दी इनका चूर्ण २ मासे, मलाई के साथ दोनों वक्त खावें।

(९) हरड़ २ मासे, बहेड़ा ४ मासे, आंवला ६ मासे जौकुट करके ऽ। पानी में भिगोदें। दूसरे दिन खूब मथकर छान लें। मिश्री मिलाकर प्रातःकाल पीवें।

(१०) सोंफ रेवदचीनी, बनफसा के फूल गुलाब के फूल, सफेद चन्दन, इनकी ठंडाई बना कर पीवें।

(११) इन्द्र जौ, सोंफ, कंकोल, सफेद चंदन, खस, असगंध, विधारा, जायफल, निशोथ, ऊंटगन के बीज, सूखे सिंघाड़े, बहमन, तोदरी, बच, दारुहल्दी, धनियां, अकरकरा इनका चूर्ण ३ मासे मिश्री मिलाकर दूध के साथ सेवन करें।

शीघ्र पतन ।

(१) सफेद कन्द १ तोले, रिहां के बीज १ तोला, अकरकरा ३ मासे पीस कर रात को शीतल जल के साथ फांकले ।

(२) ईसवगोल की भुसी. कद्दू के बीज, कासनी के बीज, धनियां, नीलोफर के फूल, भांग के बीज, बंसलोचन, अनार के फूल, गुलाब के फूल इनका चूर्ण रात को शीतल जल के साथ फांक लें ।

(३) समुन्दर, शोष, गेंदा के बीज, ढाक के बीज, काले तिल सेमल का मूसला, सिरस के बीज, इनका चूर्ण ३-३ मासे सुबह शाम सेवन करें ।

(४) उर्द का आटा घी में भून लें, मिश्री के साथ हलुआ बनाकर लें. प्रातःकाल उतना खाया करें जितना आसानी से पच जाय ।

(५) छुहारे की खीर बनाकर खावें ।

(६) कुलींजन, सेमर की जड़; कोंच के बीज, अकरकरा असगंध पीपल का गोंद, जावित्री गिलोय का सत, बंसलोचन इनका चूर्ण गो दूध के साथ सुबह शाम लें ।

बहुमूत्र ।

(१) जवाखार और मिश्री ३-३ मासे ताजे जल के साथ खावें ।

(२) राई, काले तिल कलमीशोरा, टेसू के फूल दालचीनी इनका चूर्ण २ मासे शहद के साथ खावें ।

(३) बबूल का गोंद घी में भून कर रखलें । इसे प्रातः सायं मक्खन के साथ खावें ।

(४) बबूल के फूल बबूल फली. छाल, पत्ती तथा गोंद इनका क्वाथ बना कर पीवें ।

(५) चूहे की मेंगनी, कलमीशोरा, खीरा या कद्दू के बीज पानी में पीस कर पेडू पर लेप करें ।

(७) आंवले कुचल कर १० गुने पानी में दो रोज तक भीगने दें, बाद को उसे छानलें । इस पानी में कपड़ा भिगोकर पेडू पर रखा करें ।

प्रदर ।

(१) पके हुए केले खाकर ऊपर से दूध पीवें ।

(२) कमलगट्टे की गिरी, सफेद चन्दन, खस, गुलाब के फूल, गूलर के फूल इन्हें कूट कर चूर्ण बनालें । ३ मासे चूर्ण चावल के धोवन के साथ खावें ।

(३) अशोक की छाल २ तोले कूट कर गाय का दूध ऽ।। पानी आध सेर में मंद अग्नि पर पकावें जब पानी जल जाय तो छान कर पिलावें ।

(४) सफेद जीरा, शतावर, आंवला, नीम की छाल, ३—३ मासे लेकर पावभर पानी में पीस छान कर ठंडाई की तरह पीवें ।

(५) छिले हुए ककड़ी के बीज, काकजंघा की जड़, लोध, जटामासी, खस, कमल केशर, नाग केशर, रसौत. अतीस, इन्द्रजौ, हाऊ बेर, बेल का गूदा, मोचरस, अनारदाना, मजीठ, मीठा कूट, इन्हें समान भाग लेकर कूट छान लें । यह चूर्ण ३ मासे, मिश्री मिले धारोष्ण गौदुग्ध के साथ नित्य लें ।

(६) कैथ के पत्ते, खिरनी के पत्ते.बांस के पत्ते, अशोक के पत्ते इनका रस दो तोले पीवें ।

(७) सुपाड़ी, रसौत, माजूफल, धायके फूल, निशोथ, गेरू, मुलहटी, नीलोफर इन्हें पीसकर गिलोय और अडूसे के रस में घोटे और मटर की बराबर गोली बनालें। यह गोली ताजे जल के साथ सेवन करें।

(८) अशोक की जड़ का चूर्ण १॥ मासे लेकर शहद के साथ चाटें।

(९) मोचरस और जड़वेरी के बेरों का कपड़े में छना हुआ चूर्ण २ मासे छै मासे गुड़में मिलाकर दूध के साथ लें।

(१०) लौकी के बीज छील कर पिट्ठी बनावें और उसे घी में भून लें। मिश्री डाल कर इसका हलुआ बनालें और प्रातःकाल खावें।

(११) बथुआ की जड़, खस, खिरेटी की जड़, कमल की जड़, मुलहटी दो तोले लेकर छै छटांक पानी में पकावें जब तीन छटांक रह जाय तो छान कर मिश्री के साथ पीवें।

(१२) सुगंध बाला बंशलोचन, रसौत, लोध, गेरू, जीरा, लोध, आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, श्योनाक, अनन्त मूल, अर्जुन की छाल, पाढ़, नागर मोथा, छाया में सुखाया हुआ केले की कच्ची फली, गूलर के कच्चे फल सूखे हुए, इनका चूर्ण ३ मासे लेकर मक्खन और मिश्री के साथ खावें।

वात व्याधि।

(जोड़ों की या किसी विशेष अङ्ग का जकड़ जाना या दर्द होना)

(१) दो छटांक तिली का तेल कढ़ाई में डाल कर उसमें दो तोले सोंठ की गांठें मंद मंद अग्नि पर भूनें। जब भुन जावें

वो तेल को छान लें। दर्द या जकड़न के स्थान पर इस तेल की मालिश करे।

(२) तिलका तेल १ सेर जौकुट काली मिर्च १० तोले कुचला हुआ लहसन १२ तोले अफीम १ तोले इन सबको मिलाकर एक लोहे के बर्तन में बन्द करदे। ढक्कन पर चारों ओर से मिट्टी लेस दे। इस बर्तन को चूल्हे के नीचे गड्ढा खोद कर गाढ़ दें। चूल्हे में भोजन बनता रहे। २१ दिन बाद उस बर्तन को खोद कर निकाल लें और तेल को छान कर वात व्याधि के स्थान पर लगावें।

(३) अरण्डी के बीज पीस कर गरम करलें उनमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर लेप करें।

(४) सरसों का तेल, बिनौले का तेल, महुआ का तेल अलसी का तेल, तिल का तेल इन्हें इकट्ठा करके गुनगुना करें उसमें थोड़ी अफीम मिलाकर रख लें। दर्द की जगह मालिश करें।

(५) सोंठ और बाल छड़, ग्वार पाठा के गूदे के साथ पीस कर लेप करे।

(६) महुए के तेल में कपूर मिला कर मालिश करे।

(७) चीता, बेलगिरी, रास्ना, पोहकर मूल, सहजन की छाल, गोखरू, पीपर, सेंधानमक इनका चूर्ण २ मासे लेकर शहद के साथ खावें।

(८) अरण्ड की जड़, खिरेटी की जड़, देवदारु, धमासा, रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय, बच, अडूसा, हरड़, नागरमोथा, विधारा, असगंध, अमलतास का गूदा, अडूसा, धनियाँ, कटेरी इन दवाओं को जौकुट करके आधसेर पानी में पकावे जब तीन छटांक रह जाय तो छानकर पीवे।

(९) लहसन का सेवन करे।

(१०) भाँगरा के पत्ते, सेंहड़ के पत्ते, एरण्ड के पत्ते, संभालू के पत्ते धतूरे के पत्ते बकायन के पत्ते, आक के पत्ते, कन्नेर के पत्ते इन्हें बराबर लेकर आध सेर रस निकाले। उस रस का पावभर तिली के तेल में मिलाकर मंद मंद अग्नि पर पकावे जब रस जल जाय और तेल शेष रहे तो उतार कर छान ले। इस तेल की मालिश करे।

(११) तमाखू के पत्ते, पीपर, सोंठ, भांग काली मिर्च, लौंग, जावित्री, दालचीनी, जायफल, नाग केशर, अजमायन, जायफल, इन्हें एक एक तोला जोकुट करे और सवासेर पानी में पकावे तब पांच छटाक रह जाय तो छानकर तीन छटांक तिली के तेल में मिलाकर फिर पकावे जब तेल मात्र शेष रहे तो छान कर लगावे।

(१२) धतूरे के पत्तों का भुर्ता बनाकर दर्द की जगह पर बांधें।

(१३) मेंथी के बीज ऽ। पानी में एक दिन रात भीगने दें फूलने पर उनका छिलका उतार कर पिट्ठी बनालें। बराबर ग्वारपाठा का गूदा मिलाकर गाय के घी में भूनें। खूब भुन जाय तो नीचे उतार कर सोंठ २ तोले विधारा १ तोले, असगंध २ तोले का चूर्ण इसमें मिलावे। फिर मिश्री की चासनी मिलाकर २-२ तोले के लड्डू बनाले एक लड्डू नित्य खावे।

(१४) बड़ी इलाइची तेज पात, दालचीनी, शतावर गँगरेन, पुनर्नवा, असगंध, पीपर, रास्ता सोंठ, गोखरू, विधारा, तज निशोथ इन्हें गिलोय के रस में घोट कर मटर बराबर गोली बनालें। बकरी के दूध के साथ दो गोली प्रातःकाल खावें।

(१५) १ तोले काले तिल पीसकर १ तोले पुराने गुड़ में मिला कर खावें ऊपर से बकरी का दूध पीवें।

(१६) मजीठ, हरड़ बहेड़ा, आंवला कुटकी, बच, नीमकी छाल दारु, हल्दी, गिलोय इनका काढ़ा पीवें।

विषों का उपचार।

सर्प के काटने पर—

(१) सर्प ने जहां काटा हो उस स्थान को तेज चाकू से चीर कर खून निकाल दो। या आगसे जलाके और उस स्थान पर पोटेशियम परमैगनेट (कुओं में डालने की लाल दवा) भरदो।

(२) खूब घी पिलाओ।

(३) जहां काटा हो उससे कुछ ऊपर रस्सी से खींच कर बांध दो। जिससे जहर ऊपर न चढ़े।

(४) बेहोशी न आने देनी चाहिए। आंखों पर शीतल जल के छींटे मारते रहो, बाजे आदि से शब्द करते रहो। बातों में लगाये रहो।

(५) काली मिर्च या तम्बाकू के पत्ते या कोई और हुलास सुंघाकर छींक लेने से बेहोशी नहीं आती।

(६) नमक मिला गरम जल अधिक मात्रा में मिलाकर वमन कराओ।

(७) जिस सर्प ने काटा हो उसे मार कर उसका खून काटे हुए स्थान पर लगाना चाहिए।

(८) ऐनीमा लगा कर दस्त करादो।

(९) नीम की पत्तियों का रस पिलाओ और नीम की कोंपल खिलाओ।

(१०) काली मिर्च, बन तुलसी के बीज, फिटकरी का फूला, नौसादर, माखी, अमलतास का गूदा, गिलोय, नीम की

गुठली की गिरी, तज, भुनी हींग, इनको बराबर लेकर चने जैसी गोली बनालें यह गोली आध आध घंटे के अन्तर से घी और शहद के साथ दें।

(११) काटे हुए स्थान पर तम्बाकू के पत्तों को पानी में पीसकर लेप करें।

बिच्छू के काटने पर।

(१) काटे हरताल, सेंधानमक, सोंठ, कबूतर की बीट, अपामार्ग की जड़ इन्हें नीबू के रस में पीस कर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(२) काली तुलसी के पत्ते, मोचरस, इन्द्रायण की जड़, हुलहुल के पत्ते, नौसादर, जमालगोटा इन्हें पीस कर काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(३) दरिआयी नारियल, समुद्रफल, लहसन, केसर, करंजा की गिरी, सिरस के बीज, कटेरी की जड़, तम्बाकू के पत्ते इन्हें नीबू के रस में पीस कर लेप करें।

(४) जीरे का चूर्ण दूब के रस के साथ खिलावे।

(५) गाय के घी में सोंठ मिला कर खिलावे।

(६) पोटेसियम परमेंगनेट और टार्टरिक ऐसिड मिलाकर लगायें।

मकड़ी के विष पर।

(१) मकड़ी की लार मल मूत्र या मांस जिस स्थान पर लग जाता है वह स्थान लाल हो जाता है। दर्द होता है और छोटी छोटी पीली फुन्सियां उठ आती हैं। उस स्थान पर आम की खटाई पीस कर लेप करें।

(२) हल्दी, दारुहल्दी, मजीठ,लाल चन्दन नागकेशर,

सुर्खसंख, संगजरा, धनियाँ, इनके क्वाथ से उस स्थान को बार बार धोवे।

(३) चौलाई की जड़ और हल्दी को दूब के रस में पीस कर लेप करे।

बर्र-ततैया, भौरा या मधुमक्खी के काटे पर।

(१) केसर, सोंठ, तगर, कबूतर की बीठ, सेंधानमक इनको नीबू के रस में पीस कर काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(२) तुलसी के पत्तों का रस मकोयके पत्तों का रस और आक का दूध मिला कर लेप करें।

(३) तम्बाकू के पत्ते और सेंधानमक मिट्टी के तेल में पीसकर लगावें।

(४) नौसादार और चूना पीस कर लगावें।

चूहा छछूंदर या छपकली के काटने पर।

(१) बकरी की मेंगनी बकरी के मूत्र में पकाकर लेप करे।

(२) काले तिल, जवासा, मजीठ, करंजा की गिरी, हल्दी, सिरस के बीज, इन्हें लहसन के रस में पीस कर लेप करे।

(३) चौकिया सुहागा, जायफल, वायविडंग, सिरस के बीज इन्हें नीबू के रस में पीस कर लेप करे।

(४) सोंठ, बच, पीपर, जवासा, कालीमिर्च, लौंग, कपूर दालचीनी इन्हें पीस कर लगावें।

(५) दालचीनी का तेल लगावें।

सियार या कुत्ते के काटने पर।

(१) कालीमिर्च सरसों के तेल में पीस कर काटे हुए स्थान पर लेप करें।

(२) घीग्वार (ग्वार पाठा) के गूदे में सांभर नमक मिलाकर काटे हुए स्थान पर लगावे।

(३) प्याज, अमलतास का गूदा, गंधक, सोंठ, कालीमिर्च, हींग, ओंगा की जड़ पीस कर लेप करें।

(४) आक की कली, धतूरे की जड़, पुनर्नवा की जड़ इन्हें शहद के साथ पीसकर लेप करें।

(५) लोंग के क्वाथ से काटे हुए स्थान को धोवें।

(६) फूल प्रयंगू, कूट, चिरायता, मजीठ, तेजपात्र, जवाखार, इलाइची, सोंठ, पीपर मुलहटी, ब्राह्मी, बच, अनार की कली, इन्हें अदरख के रस में घोट कर मटर बराबर गोली बनालें। एक गोली ताजे जल के साथ नित्य खिलावें।

जहर खा लेने पर।

संखिया, बछनाग, कुचला, तेलिया आदि विष खा लेने पर गरम पानी में सेंधानमक मिला कर खूब पिलावें जिससे उलटी होकर विष निकल जाय। गुदा मार्ग में ऐनीमा लगाकर या साबुन की बत्ती लगा कर दस्त करावे और जितना रोगी खा सके खूब घी खिलावें। सर्प के काटे और जहर खा लेने पर साधारण इलाज के ऊपर निर्भर न रहकर किसी कुशल अनुभवी चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिये।

नशा उतारने के लिए।

नशीले मादक पदार्थ अधिक मात्रा में खालेने पर

अधिक नशा चढ़ जाता है और अनेक उपद्रव दिखाई देने लगते हैं। ऐसी दशा में तुरन्त ही चिकित्सा करनी चाहिये।

भांग के नशे पर—(१) अंजीर के फलों का क्वाथ पिलाओ (२) मक्खन या बादाम का तेल खिलाओ। (३) खोये के पेड़े पानी में घोल कर पिलाओ (४) नीबू का अचार खिलाओ (५) दही में सोंठ और सेंध नमक डालकर खिलाओ (६) अदरख नीबू और नमक मिलाकर चटाओ।

अफीम के नशे पर—(१) कपास के पत्तों का रस पिलाओ (२) भुनी हुई हींग और काला नमक खिलाओ (३) दूध और घी मिला कर पिलाओ (४) बिनौलों की गिरी में फिटकरी मिलाकर खिलाओ (५) भुनी हुई हींग काला नमक मट्ठे में घोलकर पिलाओ।

शराब के नशे पर—(१) ककड़ी खिलाओ (२) धनियां पानी में पीसकर मिश्री डालकर ठंडाई की तरह पिलाओ (३) नीबू में नमक भर कर चुसाओ (४) मूली का रस पिलाओ (५) पानी में घोल कर फिटकरी पिलाओ।

गांजे के नशे पर—(१) पोदीना का रस पिलाओ (२) गुलाब के फूल पीस कर दूध के साथ पिलाओ (३) सोंफ, कासनी, मुलहटी, इलाइची, पोस्त के दाने इनकी ठंडाई पिलाओ। पावभर पानी में दो तोले शहद घोल कर पिलाओ।

धतूरे के नशे पर—(१) बिनौले की गिरी पानी में पीसकर पिलाओ (२) बैंगन का रस पिलाओ (३) गूलर की छाल का क्वाथ पिलाओ (४) मक्खन और मिश्री खिलाओ।

मुँह के छाले या मसूड़ों का दर्द भी ।

(१) कत्था, बबूल की छाल, वंसलोचन, मौलश्री की छाल, इलाइची, इनको बीस गुने पानी में पकावें जब तीन चौथाई रह जाय तो गरम गरम से कुल्ले करें ।

(२) पारिया कत्था, शीतल चीनी, चन्दन मुलहटी, इलायची, गावजुवां, अकरकरा मिश्री इन्हें पीस कर पान के रस में गोली बनालें इन गोलियों में मुँह में पड़ा रहने दें धीरे धीरे चूसते रहें ।

(३) इन्द्र जौ का क्वाथ शहद मिला कर पीवें ।

(४) चमेली के पत्ते पान की तरह चबावें ।

(५) घी और शहद मिला कर मुँह में भीतर पोत दें ।

दांतों को मजबूत करने के लिए ।

(१) कडुआ तेल और नमक मिलाकर मसूड़ों पर मलें ।

(२) सुपाड़ी की राख, बादाम के छिलकों की राख, कत्था, दालचीनी, हरड़, नागर मोथा, कपूर, माजूफल, फिटकरी, भुनी इलायची, अकरकरा, काली मिर्च, सेंधा नमक इन्हें पीस कर मंजन बनालें, इसे लगाने से दांत साफ़ रहते हैं, जड़ें मजबूत होती हैं और मसूड़ों के रोग दूर होते हैं ।

(३) अनार की छाल का क्वाथ बनाकर इसके कुल्ले किया करें ।

आंखें दुखना ।

(१) गुलाबजल में थोड़ा फिटकिरी का फूला डालकर उसे कई बार आंखों में बूंद बूंद टपकावें ।

(२) हल्दी आंवा हल्दी, रसौत, फिटकरी, लोध, इन्द्र जौ अफीम, ग्वारपाठे का गूदा इन्हें पीस कर पलकों पर या आंखों के आस पास लेप करें।

(३) गरम पानी में जस्ते का फूला डालकर सेंकने से दर्द बन्द होता है।

(४) गेंदे के पत्ते पीस कर उसकी टिकिया आंखों पर बांधें।

(५) रुई के फाहों पर दूध की मलाई रख कर बांधें।

(६) आरजी रोल नामक इंग्रेजी दवा का लोशन किसी कैमिस्ट की दुकान में बनवालें उसे आंखों में डालें।

(७) हलदी के पानी में कपड़ा डुबो कर आंखों पर रखें।

(८) पठानी लोध, रसौत रक्त चन्दन, फिटकरी, इन्द्र जौ, हल्दी, आंवाहल्दा कपूर, नीम को कोंपल, ग्वार का पाठा, मुलहटी इन सबको पीस कर एक कपड़े की पोटली में बांध लें। इस पोटली में आंखें बन्द करके पलकों को तर करते रहें। पोटली सूखने लगे तो उस पर पानी छिड़क कर गीली करलें।

कान का दर्द और बहना।

(१) कडुए तेल को गरम कर उसमें नीम की कोंपल और लहसन जला लें इसे छान कर कान में रक्खें।

(२) अजवाइन, समुद्र फेन, अदरख, गौ मूत्र, नीबू का रस इन्हें पानी में मिलाकर किसी लोटे में गरम करें। लोटे के मुंह पर चिलम रख कर उसका नीचे का पेट कान पर रख कर भाप भीतर जाने दें।

रक्त विकार।

खून खराबी से उठने वाली, फुन्सियां चकत्तो आदि के लिए—

(१) नीम की कोंपल ६ मासे काली मिर्च २१ आधपाव पानी में घोट छान कर ठंडाई की तरह पीवें।

(२) चिरायता, मजीठ, खैर, रास्ना, हरड़, बावची, नीम के फूल, मुलहटी सरफोंका, इनका काढ़ा पीवें।

(३) लाल चंदन, नागर मौथा, अडूसा, जवासा, चंदन, गिलोय हल्दी, कुटकी, नागकेशर, इन्द्र जौ, वच हरड़ बहड़ा आंवला, धनियां धमासा इनका क्वाथ पीवें।

(४) गिलोय, धनियां अमलतास का गूदा, बावची, इलायची, विजयसार, शाखो पटोल पत्र, कुड़े की छाल, इनका चूर्ण शहद के साथ खावें।

शिर का दर्द।

(१) सर्दी लगने से दर्द होता हो तो तुलसी की चाय पिलावें। और केशर-जावित्री सोंठ, बालछड़ इनको घी में मिलाकर सिर पर लेप करें।

(२) गर्मी से होता हो तो मिश्री मिलाकर सौंफ का अर्क या गुलाब का अर्क पिलावें। और बादाम, चन्दन, कपूर, कलमी शोरा, गेरू पीस कर सिर पर लेप करें।

दाद और छाजन।

(१) आक के फूल, पँवार के बीज, इमली के बीज, हारसिंगार की पत्ती, पलास पापड़ा, कत्था इन्हें पीस कर चूर्ण बनालें। दो रोज के रक्खे हुए खट्टे मट्ठे में मिलाकर लगावें।

(२) सिरका और नमक मिलाकर लगावें ।

(३) मुर्दासंख, गन्धक सुहागा, कबीला, माजूफल, सुहागा, कालीमिर्च, राल खुरासानी अजवायन इनका चूर्ण नीबू के रस में घोलकर लगावें ।

(४) सज्जी, मूली के बीज, सिन्दूर, कालीमिर्च, मैनसिल इन्हें पीसकर दही में मिलाकर लगावें ।

गर्मी या वर्सात के दिनों में चहरे पर जो फुन्सियाँ उठ आती हैं उनके लिए ।

(१) उठना आरम्भ होते ही उस जगह पर कालीमिर्च या सोंठ या लौंग पीस कर लेप करदें ।

(२) चोप चीनी या नीम की छाल घिसकर लगावें ।

(३) यदि पूरी उठ आवें तो पकाने के लिए कपूर और घी मिलाकर लगावें ।

(४) गंधक, नीलाथोथा, मुर्दासंख, कबीला, सुहागा कपूर इन्हें पीसकर घी में मिलाकर रखलें इस मरहम को लगावें ।

(५) नीम के पत्ते और काली मिर्च सरसों के तेल में इतने पकावें कि वे जल कर काले पड़ जावें । छान कर इस तेल को लगावे ।

(६) हरड़ बहेड़ा आंवला, धनियां, इन्द्र जौ, मुलहटी का जाकुट चूर्ण १ तोले ≈। पानी में २४ घंटे भिगो कर मथलें और मिश्री मिलाकर पिया करें ।

खाज !

(१) गंधक और तेल मिलाकर लगावें ।

(२) गंधक, नीलाथोथा, मुर्दासंख, कबीला, सुहागा, इन्हें तेल में मिलाकर लगावें ।

(३) नीम के पत्ते का रस, हल्दी और गोमूत्र इनका लेप करें।

(४) सोंठ, कालीमिर्च, लोंग, पीपर, जायफल, कनेर की जड़, आक की जड़, थूहर, सेहड़ इन्हें तेल में गरम करके जलालें। छान कर लगावें।

(५) सौवार धुले हुए घी में सिन्दूर मिलाकर लगावें।

(६) नीम के पत्ते डालकर खौलाये हुए पानी से खुजली के स्थान को रगड़ रगड़ कर धोवें।

घाव भरने के लिए नीचे लिखी दवाऐं अच्छीं हैं—

(१) प्याज और हल्दी को सिल पर पीसें उसमें थोड़ी सी मैदा मिला कर घी में भून लें इसकी टिकिया बांधें।

(२) चमेली के पत्ते, नीम के पत्ते, लहसन, करंजा, हल्दी, दारुहल्दी. हरड़, नीलाथोथा, मुलहटी, कुटकी, सोंठ मजीठ यह दवाऐं बराबर लेकर बीस गुने पानी में पकावें जब चौथाई रह जाय तो छान लें। इस क्वाथ से आध गौ घृत लेकर उसमें क्वाथ मिलालें और आग पर पकावें जब पानी जल जाय तो छान लें। इस घृत को घाव पर लगावें।

(३) शहद, घी और कपूर मिलाकर घाव पर लगावें।

(४) सुहागे का फूला, जस्ते का फूला. फिटकरी का फूला, हींग का फूला, कपूर इनको सौ बार धोये हुए घी में मिला कर लगावें।

(५) हल्दी को जला कर महीन छान लें। घाव को तेल से चुपड़ कर उसे बुरक दें इससे खुरंट पड़ जाता है।

(६) मिट्टी के तेल में रुई का फाहा भिगोकर बांध दें।

चाकू आदि से कट जाने पर खून निकल रहा हो तो।

(१) उस स्थान पर पेशाब करदें।

(२) पानी में भिगो कर कपड़ा बाध दें।

(३) चूना बुरक दें या उपले की राख लगादें।

(४) घोड़े की लीद का अर्क लगावें।

(५) रुई या पुराना कागज या बाल जलाकर उसकी राख कटे हुए स्थान पर चिपकादें।

जब फोड़ा पकजाय तो उसे दबा कर पीव निकाल दें। भीतर भरे हुए मवाद को बाहर निकालने के लिए उपाय करें—

(१) मेंथी के बीज और ग्वार पाठा महीन पीस कर सरसों के तेल में भून ले उसकी टिकिया बांधें।

(२, अंडी के पत्तों को पीसकर अण्डी के तेल में तललें उसकी टिकिया बाधें।

(३) पान के ऊपर घो और सिन्दूर लगाकर बांधें।

(४) नीम के रस में रुई का फाहा भिगो कर सरसों के तेल में गरम करें जब पानी सूखकर चटकना बन्द हो जाय तो वह फाहा बाँधें।

(५) तिल और तुलसी के पत्ते महीन पीसकर गरम करलें। इसकी टिकिया बाँधें।

घाव को नित्य धोना और साफ करना चाहिए धोने के लिए नीचे लिखी रीति से पानी तैयार करना अच्छा है—

(१) आध सेर पानी में ६ मासे फिटकरी घोल लें।

(२) लौंग ६ मासे आध सेर पानी में औटावें जब छै छटाँक रह जावे तो छान लें।

(३) सेर भर पानी में आध पाव नीम की कोंपल डालकर औटावें जब छै छटाक रह जावें तब छानलें।

(४) हल्दी, हरड़, नीम की छाल, निशोथ, दारुहल्दी इन्हें जौकुट करके बीस गुने पानी में पकावें जब तीन चौथाई रह जावें तब छान लें।

(५) आधसेर पानी में एक तोले नीबू का रस डालदें।

(६) आध सेर पानी में २ मासे कपूर और २ मासे सेंधानमक मिला दो।

फोड़ों की चिकित्सा।

यदि फोड़ा उठा ही हो तो उसे बैठाने के लिए यह लेप अच्छे हैं।

(१) हल्दी और चावल पानी में पीस कर लेप करें।

(२) दूब की जड़, खस, मुलहटी, चन्दन, सुगन्ध वाला, गुलाब के फूल, पद्माख इन्हें पीसकर लेप करें।

(३) बड़ की जटाऐं, नीम की छाल, गेंदा की पत्ती तुलसी के बीज पीस कर लेप करें।

(४) गूलर के कच्चे फल, पुनर्नवा, बालछड़, रास्ता इन्हें पीसकर लेप करे।

(५) बबूल की छाल और कत्था इनका काढ़ा बनाकर उसके पानी में कपड़ा भिगोकर बांधें।

यदि फोड़ा बढ़ गया हो, मुँह छूटने लगा हो, तो पकाने के लिए यह लेप अच्छे है-

(१) मूली के बीज, सँहजन के बीज, अलसी, तिल,

राई, अरण्डी के बीज, बिनौले, सरसों, सन के बीज इन्हें पीसकर गुनगुना लेप करें।

(२) हल्दी, आंवा हल्दी सेंधा नमक, चौकिया सुहागा, मैदा और घी इनकी पुल्टिस बनाकर बाँधो।

(३) कन्नेर की जड़ कबूतर की बीट, करंजा की गिरी, सोंठ कुटकी, कायफल, मकोय की जड़ इनका लेप करे।

(४) आक की जड़, तम्बाकू के पत्ते, लहसन इन्हें गुनगुना लेप करे।

(५) अमरबेल, तुलसी ली जड़, हरड़, हींग, सेंधानमक, सहजन की छाल इन्हें मट्ठे में पीस कर लेप करे।

आग के जलने पर

(१) नारियल का तेल जले हुए स्थान पर चुपड़े।

(२) मक्खन और कपूर मिलाकर लगावें।

(३) सौ वारके धोये हुए घी में जस्त का फूला (सफेदा) मिलाकर लगावें।

(४) थोड़ी सी फिटकरी पानी में मिलाकर जखम को धोवे।

(५) हल्दी, दारु हल्दी, लोध, रसोत, फिटकरी, कत्था, बबूल की छाल इकका क्वाथ घनी बुनावट के पतले कपड़े में छानले। उस पानी में रुई का फाहा भिगोकर जले हुए स्थान पर रखें।

(६) दही को कपड़े में बांध कर लटकादें जिससे उसका पानी निकल जाय फिर उसे घी में भूनें और टिकिया बनाकर बांध दें।

(७) कच्चे आलू पीस कर लेप करें।

(८) शहद और घी मिलाकर लगावें ।

(६) एक सेर पानी में एक छटांक चूना मिलादें जब चूना नीचे बैठ जाय तो उसमें से पानी नितार लें यह पानी और नारयल का तेल बराबर मात्रा में फेंट कर लगावें ।

(१०) नीम की कोंपल सरसों के तेल में पकावे जब पत्तियां जल जाँय तो उन्हें छान कर अलग निकाल दें । इस तेल को लगावें ।

सूखी उबकाई—बमन ।

(१) दूध को फाड़कर उसे छान लें इस पानी को जरासी मिश्री डालकर थोड़ा थोड़ा पिलावें ।

(२) बरफ चूसने से उबकाई शान्त होती है ।

(३) आधपाव पानी में एक तोले शहद घोल कर पिलावें ।

(४) चन्दन चूरा बालछड़, कचूर, आंवला, इनका काढ़ा बनाकर मिश्री मिलाकर पीवें ।

(५) लोहे की कील आग में खूब लाल करके पानी में बुझालें, इस पानी को पीने से उबकाई बन्द होती हैं ।

(६) मीठे अनार का रस, मिश्री मिलाकर पीवें ।

(७) फालसे काट शर्बत बनाकर पीवें ।

(८) धनिया, पुदीना, सफेद जीरा, अनारदाना, पित्त पापड़ा, अदरख, सौंफ, आंवला, इन सबको समान भाग लेकर खरल करलें फिर चने की बराबर गोलियां बनालें । इन गोलियों को चूसना चाहिए ।

(६) पीपल की छाल जलाकर राख करलें उसमें से

१ तोले राख आधसेर पानी में घोलदे जब राख नीचे बैठ जाय तो पानी को नितार कर पिलावें।

(१०) बड़ की जटा ३ मासे २॥ तोले पानी में पीसकर पिलावें।

(११) गुनगुने घी में बतासे डुबा डुबा कर खावें।

(१२) मुलहटी, काकड़ा सिंगी और नागरमोथा का चूर्ण बनाकर मिश्री की चासनी के साथ चाटें।

हैजा (कै दस्त)

(१) सफेद जीरा, सोंठ पीपर, लाल मिर्च, भुनी हींग, धनियां बच अजमोद, पाढ़, सेंधा नमक इन्हें बराबर नीबू के रस में खरल करके चने की बराबर गोली बनाले। गुलाबजल के साथ आध आध घंटे पर यह गोलियां दें।

(२) कासनी, इलाइची के बीज, धनियां, सोंफ गुलाब के फूल इनका क्वाथ मिश्री मिला कर दें।

(३) लोंग का चूर्ण चालीस गुने पानी में औटावे जब तीन चौथाई रह जाय तो उसे प्यास लगने पर थोड़ा थोड़ा करके चम्मच से दें।

(४) आक की जड़ की छाल १ तोला, लालमिर्च १ तोले, भुनी हींग ३ मासे, इन्हें अदरख के रस में खरल करके मूंग बराबर गोली बनालें। यह गोली पोदीना रस के साथ दें।

(५) प्याज का रस, पोदीना का रस, मूली का रस, अदरख का रस एक एक तोले मिलाकर पिलावें।

(६) सोंठ, भुनी हींग, कालीमिर्च, कपूर, अफीम,

केशर इन्हें बराबर लेकर कालीमिर्च जैसी गोली बनालें। पानी के साथ दें।

(७) पीपर, जीरा, हींग, नागरमोंथा, चित्रक, करंजा को गिरी, कुड़े की छाल सोंठ जायफल इनका चूर्ण मूली के रस और प्याज के रस के साथ चटावें।

(८) गोमूत्र में सेंधा नमक मिलाकर पिलावें।

कै उलटी (पानी, पित्त या अन्नकी)

(१) हरी गिलोय एक तोले कुचल कर आध सेर पानी में पकावें जब आधपाव रह जावे तो शहद के साथ मिलाकर पिलावें।

(२) आम के पत्ते, जामुन के पत्ते, बेलगिरी, बेर के पत्ते, आंवले, छोटी पीपल, छै छै मासे लेकर आधसेर पानी में पकावे जब आधपाव रह जावे तो छान कर पीवें।

(३) गेंहूं की रोटी को जलाकर उसकी राख पानी में घोल दें जब पानी नितर जाय तो उसे ऊपर से उतार कर पिलावें।

(४) दूब की जड़ का रस निकाल कर उसमें छोटी इलायची का चूर्ण २ मासे मिलाकर चटावें।

(५) गौ के ताजे दूध में मुलहटी और लालचन्दन मिलाकर पिलावें।

(६) बेर की गुठली का गूदा, फूल प्रियंगू, इलाइची, लोंग, नागकेशर, सफेद चन्दन, पीपल, इनको बराबर लेकर कूट छानकर चूर्ण बनालें। २ मासे लेकर शहद के साथ चटावें।

(७) मौलसिरी की छाल, आम की गुठली, बेलगिरी,

अशोक की छाल, बबूल की छाल, कत्था यह सब ६-३ मासे लेकर तीन पाव पानी में पकावें जब चौथाई रह जाय तो थोड़ा थोड़ा करके चम्मच से पिलावें।

(८) गेरू आग में खूब लाल करके उसे पानी में बुझावे और उस पानी को नितार कर पिलावें।

(९) नीबू बीच में काटकर उसमें सेंधा नमक, काली मिर्च पीस कर गोद गोद कर भर दें, फिर उसे आग पर गरम करके चुसावें।

(१०) थोड़ी इलायची, भुनी हींग, जीरा, पुदीना, धनियां, काला नमक, सेंधा नमक, पीपल, अदरख, सुहागे का फूला इनकी चटनी बनाकर चटावें।

(११) सिरका और काला नमक मिलाकर चटावें।

(१२) छोटी पीपल को नीबू के रस में घोटें जब रस सूख जाय तो फिर डाललें इस प्रकार चार भावना देकर चने का बराबर गोलियां बनालें, इन गोलियों को चूसने से वमन बन्द होती है।

(१३) केले के भीतरी गूदे का रस निकाल कर उसमें थोड़ी चीनी मिला कर पिलावें।

(१४) करंजे के बीज, इमली के बीज, नीम के बीज, कमलगट्टा इन सबको भून कर भीतर की गिरी निकाल लें। बराबर मात्रा में लेकर आंवले के रस में घोट डालें और मूंग की बराबर गोली बनालें। दो गोली गरम पानी के साथ दें।

(१५) हींग पानी में घोलकर पेट पर उसकी हलकी हलकी मालिश करें।

(१६) पिपरमेण्ट, सत अजवायन और कपूर यह

तीनों चीजें बराबर लेकर एक शीशी में बंद करके कड़ी डाट लगाकर रखदें कुछ देर में तीनों का पानी सा हो जायगा इसमें से १०-१५ बूंद दो तोले पानी में डाल डाल कर थोड़ा थोड़ी देर बाद पिलाते रहें।

(१७) आलू बुखारा मुँह में डालकर चूसते रहें।

अनिद्रा।

(१) काकजंघा की जड़ पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से निद्रा आती है।

(२) छै मासे पुराने गुड़ में तीन मासे पीपलामूल मिलाकर शाम को खाने से रात को अच्छी नींद आती है।

(३) प्याज का रस एक तोला औटे हुए दूध में मिलाकर रातको पीवें।

(४) पैर के तलवों पर तिलका तेल मलें।

(५) बकरी के दूध में थोड़ी सी भांग पीसकर मिलालें और पांव के तलवों और हाथ की हथेलियों पर मालिश करावें।

(६) गाय का धारोष्ण दूध कपाल पर धीरे धीरे मलने से नींद आती है।

(७) कान में सरसों का तेल डालने से नींद आती है।

मदाग्नि-अपच।

(१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, सेंधा नमक, सफेद जीरा, काला जीरा, अजमोद, हींग का फूला बराबर लेकर कूट छानलें। भोजन में पहले ग्रास में घी के साथ इसे खावें।

(२) सोंठ, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चित्रक, तालीस-

पत्र, दालचीनी जीरा. सोंठ, अमलवेत, अनारदाना, पांचों नमक बराबर लेकर कूट छाल लें। भोजन के बाद २ मासे लें।

(३) चीते की छाल, पीपर. सोंठ अजमोद, जीरा, जवाखार इलाइची, धनियां, तेजपात, लोंग, कालीमिर्च तालीस पत्र, दालचीनी, नाग केशर, इलाइची, पांचों नमक बराबर लेकर कूट छान लें। सबेरे मट्ठा के साथ २ मासे लें।

(४) लाल मिर्चों को अदरख के रस व नीबू के रस में एक मास तक खरल करें, फिर कालीमिर्च की बराबर गोलियां बनालें। पान में रखकर यह गोली खावे।

(५) सोंफ सोंठ और मिश्री बराबर मिलाकर रखलें। ताजे पानी के साथ लें।

(६) जवाखार और सोंठ का चूर्ण गर्म पानी के साथ फाँकें।

(७) सुखा पोदीना, इलाइची, सोंठ सोंफ गुलाब के फूल धनियां, सफेद जीरा, अनारदाना, आलूबुखारा, हरड़, इन्हें पीसकर बराबर मिश्री मिलाकर रखलें। ३ मासे ठंडे जल में लें।

(८) दस्त कराने की जरूरत हो तो कालादाना ६ मासे मिश्री ६ मासे मिलाकर गर्म पानी के साथ लें।

(९) सनाय, अमलताश का गूदा, बड़ी हरड़ का बकल, अंजीर सोंफ, मुलहटी इन्हें सब मिलाकर दो तोले लें आधसेर पानी में पकावें, तीन छटांक रह जावे जो छानकर पीवें इससे तीन बार दस्त होकर पेट साफ हो जाता है।

(१०) जुलाफा हरड़ का चूर्ण लेने से भी दस्त हो जाते हैं।

(११) सिरका, सोंठ और काला नमक भुना सुहागा

और हींग का फूला मिला कर देने से पेट का दर्द बन्द होता है।

(१२) चूहे की मेंगनी, सौंफ और सांभर नमक पानी में पीस कर पेट पर लेप करने से दर्द बन्द होता है।

पेट में कीड़े पड़ जाना।

(१) ऐनीमा द्वारा साबुन और नीबू का रस मिला पानी गुदा मार्ग से पेट में चढ़ावें। इससे कीड़े मर कर दस्त के साथ निकल जाते हैं।

(२) वायविडंग का चूर्ण, वायविडंग के क्वाथ के साथ सेवन करें।

(३) सोंठ कालीमिर्च, पीपल, वायविडंग, भुनी हींग, अजमोद, पीपलामूल, सज्जी इनका क्वाथ बना कर पीवें।

(४) ढाक के बीजों को पीस कर नीम के रस के साथ खरल करके चने जैसी गोली बनालें, शहद के साथ लें।

(५) जायफल १ मासे, शहद के साथ चाटें।

(६) पीपर का चूर्ण नीबू के रस के साथ चाटें।

(७) निशोथ, अजवायन, नीम की कोंपल, नीबू की जड़, हींग कबीला, इन्हें गौ मूत्र में घोट कर चने जैसी गोली बनालें। मट्ठे के साथ लें।

(८) शुद्ध अरण्डी का तेल (कैस्टर आइल) पिला कर दस्त करावें।

(९) नौसादर दो मासे पीस कर गरम पानी के साथ लें।

(१०) नीम की कोंपल, पोदीना, करेले के पत्ते, लहसन इन चारों को मिलाकर रस निकालें। इस रस को २ तोले नित्य पीवें।

(११) धतूरे के पत्ते, एरण्ड के पत्ते मेंहदी के पत्ते प्याज इन्हें पीस कर गुदा पर लेप करें।

दस्त।

(१) अतीस, इन्द्र जौ, बेलगिरी, धनियाँ नागरमोथा, सुगँधवाला इनका २ तोले लेकर ऽ॥ पानी में पकावें चौथाई रह जाने पर छान कर पीवें।

(२) अजवायन, सोंठ, पटोलपत्र, कूट, बच बेलगिरी इनका चूर्ण १॥ मासे लेकर शीतल जल के साथ लें।

(३) धाय के फूल, मजीठ, लोध मोचरस, अनार का बक्कल, इन्हें समान भाग लेकर चूर्ण बनालें। २ मासे की मात्रा चावल के धोवन के साथ लें।

(४) आम की गुठली की गिरी, फूल प्रियंगू, बेलगिरी, जामुन की गुठली की गिरी, सूखे सिंघाड़े, लोध, धाय के फूल, सोनपाठा इन्हें बराबर लेकर कूट पीस लें। दो मासे चूर्ण उबले हुए चावल के मांड के साथ लें।

(५) लजवन्ती के बीज १ तोला, मोचरस १ तोला ढाक का गोंद १ तोला। अफीम १ मासे इन्हें पीस कर रुई की बराबर गोलियां बनालें। दो दो गोली ताजे जल के साथ दें।

(६) जायफल १ तोले, छुहारे का बक्कल १ तोले, बेलगिरी १ तोले अफीम १ मासे इन्हें पान के रस में घोंट कर मूँग जैसी गोलियां बनालें। दो दो गोली गुनगुने पानी के साथ लें।

(७) भांग, जायफल, इन्द्रजौ, बबूल का गोंद, मौलश्री की छाल, अतीस, कत्था, लोध, अनार के फूल, सौंफ, सोंठ मोचरस, इनका चूर्ण २ मासे लेकर नमक और जीरा पड़े हुए मट्ठे के साथ लें।

(८) तालमखाने का चूर्ण ३ मासे लेकर पानी निचोड़े हुए दही के साथ खावें। दही में भुना जीरा, कालानमक तथा सोंठ मिला लें।

(९) पीपर, पीपरा मूल, धनियां, सफेद जीरा, सोंठ, इलाइची, नागकेशर दालचीनी, चित्रक, चव्य, इन्हें बराबर लेकर कूट छान लें फिर अनारदाने के रस में खरल करके चने की बराबर गोली बनालें। बबूल की छाल के क्वाथ के साथ यह गोली लें।

(१०) कुड़े की छाल, जावित्री, सोंठ, जायफल, मस्तंगी, कैथ के बीज एक एक तोले, भुनी हुई हींग ३ मासे, कालानमक ३ मासे, इनका चूर्ण सेवन करें।

(११) छुहारे की गुठली और रसौत घिसकर चाटें।

(१२) इसबगोल की भुसी १॥ मासे पानी के घूंट के साथ उतार लें।

खूनी दस्त।

(१) आंवले के पत्ते, जामुन के पत्ते, बबूल के पत्ते, आम के पत्ते, अशोक के पत्ते बराबर लेकर इनका रस २ तोले निकालें, थोड़ा बकरी का दूध मिलाकर पीवें।

(२) मट्ठा और मिश्री मिला कर पीवें।

(३) कतीरा, गेरू, कोंच के बीज, कत्था, अशोक की छाल, मरोड़ फली, अनारदाना, धनियां, इलाइची, बंशलोचन, नागकेशर, मस्तंगी, इन्हें पोदीना के रस में खरल करके चने की बराबर गोली बनालें। इन्हें आम की छाल के क्वाथ के साथ लें।

(४) गोरखमुण्डी, सोंफ और मिश्री तीनों चीजें बराबर

मिलाकर रख लें । इसमें से ३ मासे लेकर शीतल जल के साथ लें।

(५) मरोड़फली और ईसबगोल ६-६ मासे लेकर Si पानी में पीस छान कर पीवें।

बवासीर ।

(१) नीम की गुठली का गूदा, काले तिल, नाग केशर, चीता, हाऊ वेर, इन्हें कूटकर अदरख के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोली बनालें। एक गोली नित्य मट्ठे के साथ सेवन करें।

(२) लालचन्दन, सोंठ, धमासा, चिरायता, दारु हल्दी, कमलगट्टा, नागकेशर, खिरेटी इनका चूर्ण दही के साथ सेवन करें।

(३) जमीकन्द को भूनकर दही के साथ खावें।

(४) काले तिल दो तोले लेकर मिश्री के साथ प्रातःकाल चटावें।

(५) मूली के बीज चाकसू, रसौत, सफेद कत्था, कमल केशर, नाग केशर, रसौत, तंतरीक समान भाग लेकर चूर्ण बनावे। २ मासे शहद के साथ लें।

(६) बिदारी कन्द और पीपर समान भाग लेकर चूर्ण बनालें। इसमें से २ मासे लेकर बकरी के दूध के साथ सेवन करें।

(७) जले हुए गेंहूं ६ मासे पीसकर दो तोला मक्खन के साथ खावें।

(८) जमीकन्द के टुकड़े करके छाया में सुखा लें, निबौली का गूदा समान भाग लेकर कूट छान लें, इस चूर्ण को ३ मासे लेकर गौ के ताजी मठे या शीतल जल के साथ लें।

(९) गूलर के फल और गेंदे की पत्ती ६-६ मासे काल मिर्च १ मासे ऽ। पानी में पीस पर मिश्री मिलाकर पीवें।

(१०) जायफल, पीपर, धनियां, दालचीनी, तेजपात, चीते की छाल, तालीसपत्र, नागरमोथा, तालीसपत्र, पीपलामूल, चीते की जड़, दालचीनी, देवदारु रसौत, माजूफल, हरड़ कलमी शोरा इन सबको कूट छानकर मूली के रस में घोटकर मटर बराबर गोली बनाले । अदरख के रस के साथ एक गोली नित्य लें।

(११) बबूल की पत्ती, कंघी की पत्ती, छै छै मासे काली जीरी और काली मिर्चें एक एक मासे इन्हें आधपाव पानी में पीसकर मिश्री मिला कर पीवें।

(१२) करंजा की गिरी, हार सिंगार के बीजों की गिरी, बबूल के बीजों की गिरी, जामुन के बीजों की गिरी, बकायन के बीजों की गिरी इमली के बीजों की गिरी, कालीमिर्च समान भाग लेकर मटर बराबर गोली बनावें । मट्ठे के साथ सेवन करें।

बवासीर के मस्से पर लेप।

(१) सेंहड़ का दूध और हल्दी का चूर्ण मिला कर मस्सों पर जरासा लगा देना चाहिये।

(२) कड़वी तोरई की जड़ का मस्सों पर लेप करना चाहिये।

(३) कन्नेर के पत्ते, नीम के पत्ते, आक के पत्ते और सहजन के पत्ते इन्हें पीसकर मस्सों पर लेप करें।

(४) शंख, सज्जी, नीलाथोथा, सेंधानमक, करंजे की गिरी, पीपर, इन्हें नीबू के रस में खरल करके बड़ी बड़ी गोलियां बनालें। इन गोलियों को घिस कर मस्से पर लगावें।

(५) भांग, गूगल भुनी फिटकरी. मुलतानी मिट्टी इन्हें थूहर के दूधमें खरल करके बड़ी बड़ी गोली बनालें। घिस-कर मस्सों पर लगावें।

(६) सुहागे का फूला, फिटकिरी का फूला, हींगका फूला, हल्दी, कपूर इनको सौ बार धोये हुए घी में मिलाकर रखलें। मरहम की तरह मस्सों पर लगावें।

(७) आक के पत्ते, तमाखू के पत्ते चिरमिटी के पत्ते इन्हें भीगे कपड़े में लपेट कर भूभल में भुर्ता बनालें। फिर इन्हें निचोड़ कर जो रस निकले उसे मस्सों पर लगावें।

(८) कलमी शोरा और रसौत मूली के रस में पीसकर मस्सों पर लगावें।

पेट में उठने वाला बायु गोला।

(१) सोंठ, जीरा, हरड़, काला नमक, बच, हींग, चव्य, चित्रक, पीपरामूल, अम्लवेत, अनारदाना, जवाखार, सुहागे का फूला इन्हें अदरख के रस में घोटकर मटर बराबर गोली बनालें। यह गोली गरम पानी से लें।

(२) सज्जीखार ३ मासे पुराना गुड़ ६ मासे मिलाकर सेवन करें।

(३) जब दर्द उठ रहा हो तब ऐनीमा देकर दस्त करादें, दर्द बन्द हो जाता है।

(४) अजवायन ३ मासे, काला नमक १ मासे पीसकर मट्ठे के साथ लें।

(५) चीता, चव्य, पीपर, पीपरा मूल, भारंगी, जवा-खार इनका काढा बनाकर पीवें।

(६) बाजरा आधी छटांक लेकर दस छटांक पानी में पकावे जब तीन छटांक रह जावे तब छान कर पीवें।

(७) सरसों, राई, अंडी के बीज तिल, अलसी, बिनौले की गिरी, महुआ की गिरी, नारियल की गिरी, चिरोंजी, कमल गट्टे की गिरी इन्हें पीस कर गुनागुना करले और वायु-गोले के स्थान पर लेप करें।

(८) अमरबेल और नागरमोथा पीसकर गाय के मट्ठे में पकालें। वायुगोला के स्थान पर लेप करें।

मोटापा।

(१) जिसके शरीर में चर्बी बढ़ गई हो उन्हें व्यायाम की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए। घी दूध, गेंहूं तथा फलों की मात्रा भोजन से कम कर देनी चाहिए। भोजन में जौ, चना, मटर आदि रूक्ष पदार्थों की मात्रा बढ़ा देनी चाहिये। इस रोग में उपवास करना, भूखे रहना, कुछ कम खाना बहुत अच्छा है।

(२) सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, चित्रक, जीरा, हींग का फूला समान भाग पीस कर चूर्ण बनालें। इसमें से २ मासे चूर्ण लेकर ताजे पानी के साथ नित्य प्रातःकाल सेवन करें।

(३) शहद से लगा लगा कर मूली खावें।

(४) सोंठ, सौंफ, चव्य, वायविडंग काला नमक इनका चूर्ण २ मासे गाय के मट्ठे के साथ नित्य खावें।

(५) बेर की पत्ती, अनार की कली, गिलोय, अरंड की जड़, ढाक के फूल इन पाँचों को एक एक मासे लेकर आध-पाव पानी में पीस लें, और मिश्री मिलाकर पीवें।

(६) नागरमोथा, कूट, दालचीनी, लौंग, देवदारु वाय-विडंग, सोंठ, मुलहटी इनको समान भाग लेकर गिलोय के

रस में मटर बराबर गोली बनालें, चावल के मांड़ के साथ एक गोली नित्य खावें।

बच्चों के रोगों की चिकित्सा।

खांसी—(१) अतीस, काकड़ासिंगी, पीपल, नागरमोथा इन चारों को समान भाग लेकर पीस कर रखलें। यह चूर्ण थोड़ा सा लेकर शहद के साथ चटाने से बच्चों के दस्त, ज्वर, दूध पटकना और खांसी को लाभ होता है।

(२) धनियां, इन्द्र जौ, मिश्री जरा जरासी लेकर चावल के धोवन के साथ पीसलें। इस पानी को थोड़ा थोड़ा पिलावें।

(३) अडूसे के रसमें मुनक्का पीस कर चटावें।

(४) अदरख, पानका रस और शहद मिला कर चटावें।

(५) देवदारु की लकड़ी दूध में घिसकर पिलावें।

ज्वर—(१) धाय के फूल, सुगंध वाला, लोध, नागरमोथा इनका चूर्ण माता के दूध या शहद के साथ चटावें।

(२) पीपल का चूर्ण शहद के साथ चटावें।

(३) गिलोय के रस, शहद में मिलाकर चटावें।

(४) माता के दूध में बंशलोचन मिलाकर पिलावें।

(५) नागरमोथा का क्वाथ शहद मिलाकर पिलावें।

दस्त—(१) बिलगिरी पानी में घिसकर चटावें।

(२) छुहारे की गुठली घिस कर चटावें।

(३) अतीस का चूर्ण, चावल के मांड के साथ पिलावें।

(४) नेत्र वाला, धाय के फूल, मजीठ, गजपीपल इनका क्वाथ पिलावें।

(५) कमल केशर, मोचरस, छुहारे का वक्कल, लजवन्ती के बीज, अजमोद, बायबिडंग, जीरा, भुनी हींग इन्हें पीसकर मूंग की बराबर गोली बनालें, चावल के धोवन के साथ यह गोली दें।

(६) अधिक दस्त होते हों तो अफीम एक सरसों की बराबर लेकर माता के दुध के साथ पिलादें।

दूध की उलटी करना—(१) हींग को पानी में घोल कर पेट पर लेप करे।

(२) छोटी इलाइची और दालचीनी का चूर्ण शहद के साथ दें।

(३) पीपल और मुलहटी का चूर्ण नीबू के रस एवं शहद के साथ चटावें।

(४) सोंठ, सोंफ, बड़ी इलाइची, तेजपात, जीरा, भुनी हींग इन्हें पीसकर मिश्री की चासनी के साथ चटावें।

(५) सोना गेरू पानी में घोलकर जरा जरासा पिलावें।

पेट फूलना—(१) काला नमक और हींग का फूला घिस कर चटावें।

(२) सोंठ भारंगी, पीपल और सेंधा नमक मिलाकर दें।

(३) सिरका और नमक मिलाकर दें।

(४) गुदा मार्ग में नहाने के साबुन की बत्ती सी बनाकर रखदें। थोड़ी देर में दस्त होकर पेट ठीक हो जायगा।

(५) सनाय, बड़ी हरड़ का बक्कल, अमलताश का गूदा पानी में पीस कर मिश्री मिलाकर दें।

खून खराबी-(शरीर पर चकत्ते या खुजली फुन्सियाँ उठना ।)

(१) हल्दी, नीम की छाल, सारिवा, मजीठ, मुलहटी इनका क्वाथ शहद के साथ पिलावें ।

(२) हरड़, खस, सफेद चंदन, इन्द्र जौ. जामुन की छाल इनका चूर्ण मक्खन और मिश्री के साथ खिलावें ।

(३) हल्दी, सरसों, मुलहटी, इन्द्र जौ, नागरमोथा, सफेद चंदन, लाल कमल, इन्हें पानी में पीस कर शरीर पर लेप करें ।

(४) मट्ठे में वाय विडंग और थोड़ा नमक मिलाकर शरीर पर लगावें ।

(५) नीम की कोंपल और तिल पीस कर शरीर पर लगावे ।

मुँह के छाले—(१) आमकी गुठली, रसौत सोना गेरू, पपरिया कत्था, इन्हें पीसकर शहद में मिलाकर मुँह में लगावे ।

(२) मुलहटी, लोध, वंशलोचन, इलाइची इनका क्वाथ बनाकर मुँह में डाले ।

(३) पीपल के पत्तों का रस, पान का रस बराबर मिलाकर मुंह में भीतर पोत दें ।

(४) कुलंजन, अदरख, हल्दी, खस, देवदारु इनके क्वाथ से कुल्ला करवावें ।

(५) इलाइची, कत्था, चन्दन, मुलहटी, धनियां मिश्री इन्हें पान के रस में पीसकर छोटी छोटी गोलियां बनालें । इन गोलियों को मुँह में रख कर चुसावें ।

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें।

यह बाजारू कितायें नहीं हैं, इनकी एक एक पंक्ति के पीछे गहरा अनुभव और अनुसंधान है।

[१] मैं क्या हूं ? ।=)
[२] सूर्य चिकित्सा विज्ञान ।=)
[३] प्राण चिकित्सा विज्ञान ।=)
[४] परकाया प्रवेश ।=)
[५] स्वस्थ और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या ।=)
[६] मानवीय विद्युत के चमत्कार ।=)
[७] स्वरयोग से दिव्य ज्ञान ।=)
[८] भोग में योग ।=)
[९] बुद्धि बढ़ाने के उपाय ।=)
[१०] धनवान बनने के गुप्त रहस्य ।=)
[११] पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि ।=)
[१२] वशीकरण की सच्ची सिद्धि ।=)
[१३] मरने के बाद हमारा क्या होता है ।=)
[१४] जीव जन्तुओं की बोली समझना ।=)
[१५] ईश्वर कौन है ? कहां है ? कैसा है ? ।=)
[१६] क्या धर्म ? क्या अधर्म ? ।=)
[१७] गहना कर्मणोगति ।=)
[१८] जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्विक प्रकाश ।=)
[१९] पंचाध्यायी धर्म नीति शिक्षा ।=)
[२०] शक्ति संचय के पथ पर ।=)
[२१] आत्म गौरव की साधना ।=)
[२२] प्रतिष्ठा का उच्च सोपान ।=)
[२३] मित्र भाव बढ़ाने की कला ।=)
[२४] आन्तरिक उल्लास का विकाश ।=)

[२५] आगे बढ़ने की तैयारी |=)
[२६] आध्यात्म धर्म का अवलम्बन |=)
[२७] ब्रह्म विद्या का रहस्योद्घाटन |=)
[२८] ज्ञान योग, कर्मयोग, भक्तियोग |=)
[२९] यम और नियम |=)
[३०] आसन और प्राणायाम |=)
[३१] प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि |=)
[३२] तुलसी के अमृतोपम गुण |=)
[३३] आकृति देखकर मनुष्य की पहिचान |=)
[३४] मैस्मरेजम की अनुभव पूर्ण शिक्षा |=)
[३५] ईश्वर और स्वर्ग प्राप्ति का सच्चा मार्ग |=)
[३६] हस्तरेखा विज्ञान |=)
[३७] विवेक सतसई |=)
[३८] संजीवनी विद्या |=)
[३९] गायत्री की चमत्कारी साधना |=)
[४०] महान् जागरण |=)
[४१] तुम महान् हो |=)
[४२] गृहस्थ योग |=)
[४३] अमृत पारस और कल्पवृक्ष की प्राप्ति |=)
[४४] घरेलू चिकित्सा |=)
[४५] बिना औषधि के कायाकल्प |=)
[४६] पंच तत्वों द्वारा संपूर्ण रोगों का निवारण |=)
[४७] हमें स्वप्न क्यों दीखते हैं ? |=)

कमीशन देना क़तई बन्द है। हां, आठ या इससे अधिक पुस्तकें लेने पर डाक खर्च हम अपना लगा देते हैं।

पुस्तक मिलने का पता—

मैनेजर—'अखण्ड-ज्योति' कार्यालय, मथुरा।

मुद्रक—पं० हरचरन लाल शर्मा, पुष्पराज प्रिंटिंग वर्क्स, मथुरा